IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बौद्ध त्रिकाय तुलनात्मक समीक्षा

डॉ0 राजीव रंजन पाण्डेय, सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग, आर0 बी0 जी0 आर0 कॉलेज, महाराजगंज, सिवान, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार

त्रिकाय सिद्धांत बुद्धत्व के तीन घटकों, शरीरों या तत्वों का संग्रह, से बना हुआ है। धर्म शरीर (बुद्धत्व के अंतिम बिंदु), आत्म आनंद का शरीर अनेक रूप में संभोगकाय (दिव्य और जादुई पहलू) और अभिव्यक्ति शरीर (मानवीय और सांसारिक पहलू)।[1]

निर्माणकाय

निर्माणकाय में बुद्ध शरीर कल्याण हेतु पृथ्वी पर सशरीर धारण करता है, और मृत्यु प्राप्त होता है। यह आमतौर पर ''ऐतिहासिक बुद्ध'' से जुड़ा है– जैसे, शाक्यमुनि बुद्ध।[2] यह सशरीर लौकिक एवं मानवतावादी पहलू है। यह संभोगकाय द्वारा निर्मित असंख्य जादुई अभिव्यक्तियों में, एक संभोगकाय प्रतिबिंब है।[3]

हर युग के बुद्ध अलग–अलग रूप धारण करते है।

शिल्प–जन्म–महाबोधि.....महामायो विमोचने।।[4]

स्थविरवादियों के अनुसार –

''भगवान अर्हत सम्यक ज्ञान सम्पन्न, विद्या एवं आचरण से युक्त, सदगति देनेवाला लोकज्ञाता, श्रेष्ठ, मनुष्यों में नायक, देवता और मनुष्यों के उपदेशकर्त्ता ज्ञान सम्पन्न महापुरूष थे।''[5]

निर्माणकाय की संख्या का अंत नहीं है।

संभोगकाय–

संभोगकाय, निर्माणकाय से अत्यंत सूक्ष्म है। श्रावक निर्माणकाय धारण करते है, और बोधिसत्त्व, संभोगकाय शरीर।

संभोगकाय दो प्रकार के होते है – 1. स्वसंभोगकाय, 2. परसंभोगकाय।

स्वसंभोगकाय बुद्ध का विशिष्ट शरीर है और पर संभोगकाय बोधिसत्व का शरीर है। स्वसंभोगकाय बुद्ध ने महान सूत्रों का उपदेश गृद्धकूट पर्वत पर दिया था। पच्चविंशति साहस्त्रिका के अनुसार संभोगकाय शरीर असाधारण है, एक–एक छिद्र से प्रकाश के अनंत एवं असंख्य धारायें निकलकर जगत को प्रकाशमान करती है– उनकी उपदेशिक जिह्य से असंख्य प्रभा निकलती है, हरेक बोधिसत्व, **स्वसंभोगकाय** बुद्ध

शरीर की प्रकाशमान प्रभा का अनुभव करता है। प्रत्येक साधानालीन बोधिसत्व को, सूक्ष्मशरीर प्रभावान बुद्ध देश–काल और परिस्थिति अनुसार, अलग–अलग स्वभवानुकूल उपदेश करते है। लंकावतारसूत्र में इसे **'निष्यन्द बुद्ध'** कहा गया है।

'सूवर्ण प्रभाससूत्र' के कथनानुसार 'संभोगकाय' बुद्ध का सूक्ष्म शरीर है, इसमें महापुरूष के समस्त लक्षण पाये जाते है। परसंभोगकाय में महापुरूष के लक्षण है, परंतु उसका चित्त पूर्ण शुद्ध नहीं है। स्वसंभोगकाय में महापुरूष के लक्षण साथ–साथ होते हुए चित्त भी शुद्ध सत्य रहता है।

चित्त में चार गुण विद्यमान रहते है – 1. आदर्श ज्ञान, 2. समता 3. प्रत्यवेक्षणा ज्ञान (भेदात्मक ज्ञान), 4. कर्त्तव्यों का ज्ञान (कृत्यानुष्ठान)

स्वसंभोगकाय बुद्ध शरीर का दर्शन, पृथ्वी पर साधनाग्रस्त शुद्ध बोधिसत्व को होता है, जो उनका नित्य ध्यान लगाते है।[6]

यह स्वसंभोगकाय बुद्ध शरीर भक्ति का विषय है, महायान में। यह बुद्ध को सर्वज्ञ, पारलौकिक, अपार शक्ति युक्त, करूणा से ओतप्रोत प्रभामय शरीर मानता है, जो महापुरूष के 32 प्रमुख चिह्नों से बना हैं – सुनहरी प्रभा, तेजवान, पारलौकिक।[7]

स्वसंभोगकाय सुक्ष्म बुद्ध शरीर अत्यंत प्रभावान, शुद्ध, स्थायी सर्वव्यापी भौतिक शरीर के साथ अर्जित योग्यता और ज्ञान के संचय से उत्पन्न अनंत वास्तविक गुण, यह स्थायी सर्वव्यापी, समय के अंत तक रहेगा। अद्वितीय गुण से भरा, इसका ज्ञान एक शाश्वत परिपूर्ण शुद्ध भूमि भी बनाता है, जहाँ स्वसंभोगकाय स्थायी रूप से निवास करता है।[8]

परसंभोगकाय शरीर, स्वं संभोगकाय बुद्ध शरीर के समान नहीं है, ये संवेदनशील प्राणियों की आवश्यकताओं के सापेक्ष है, ये हर युग में हो रहे परिवर्तन से गुजरकर संदेहरहित ज्ञान, मार्गदर्शन करते है।[9]

धर्मकाय

धर्मकाय, बुद्ध का वास्तविक परमार्थभूत शरीर है, ये अनंत, अपरिमेय, सर्वत्र व्यापक, अनिर्वचनीय है। यह संभोगकाय, निर्माणकाय एवं जगत आदि सबका मूल आधार है।

संभोग–विभूता–हेतुर्थयेष्टं भोगदर्शने!![10]

धर्मकाय समस्त बुद्धों के लिए एक है, संभोगकाय, अनेक है। जैसे सूर्य अनेक प्रतिबिंबों को, जलपात्र की उपस्थिति में विभिन्न, दिखाता है, उसी प्रकार धर्मकाय से जगत भासित होता है। **लंकावतार** सूत्रानुसार– ''धर्मकाय बुद्ध अपने पूर्ण एकत्व के स्व–स्वरूप में बुद्धत्व है, जिसमें परमशांति व्याप्त है– समस्त भेदत्व से परे, तथागतों के स्वरूप, आर्य प्रज्ञायुक्त, अज्ञेय, अनिर्वचनीय अप्रतिबंधित है, यह सभी वस्तु, विचार, काय का आधार है। धर्मकाय बुद्ध केंद्रीय सूर्य है, जो सबको धारण और प्रकाशित करते है। तथागत के दृष्टिकोण से धर्मकाय प्रमुख है, बोधिसत्व दृष्टिकोण से संभोगकाय है, भक्तिपूर्ण आचरित सामान्य प्राणी दृष्टिकोण से निर्माणकाय है। धर्मकाय उच्चतर शुद्ध अवस्था है, संभोगकाय विवेकशील मानसिक शुद्ध अवस्था, भौतिक सिद्धियुक्त है, जबकि निर्माणकाय कृत्यानुष्ठानज्ञान (कर्त्तव्य ज्ञान), जो पंच इंद्रियों चेतनाओं की प्रारंभिक शुद्ध अवस्था है।

नागार्जुन प्रतिपादित शून्यवाद, समस्त द्वंद्वो से परे, चतुष्कोटि–विर्निमुक्त, अनिर्वचनीय है, जहाँ ''न तो अस्तित्व है और न अनस्तित्व, न विनाश न स्थायी, न सद्सत, न सत न असत है'' परमार्धथः स्वभावशून्य है,

पर ये अभवात्मक नही है। वो **'है'** पर क्या 'है' शब्दों से परे है, न स्वतः, न परतः, न स्थायी न विनाश, सदसत, आदि सभी कोटियों से परे, भावात्मक है।[11] यहीं धर्मकाय बुद्ध का **'मौन'** है। परमार्थतः स्वभावशून्य है, व्यवहारतः प्रतीत्यसमुत्पाद है, परस्पर निर्भरता है, परिवर्तनशील क्षणिक है।

योगाचाार में धर्मकाय, सभी आलय विज्ञान का आश्रय है, जबकि धर्मकाय निराधार, स्वतःनिर्भर, इन्द्रीयादि व्यापार से पृथक, परे है।[12]

जैसे अंतरिक्ष मे विविध रूपों का उद्‌भव और अंत होता दिखाई देता है, फिर भी अंतरिक्ष न तो उत्पन्न होता है न नाश। उसी प्रकार धर्मकाय शुद्ध धर्मक्षेत्र में न तो उत्पत्ति होती है और न अंत।[13] जगत शशश्रृंग असत है, के भाँति भासता है।

निष्कर्ष

निर्माणकाय बुद्ध का सशरीर लोकशिक्षा हेतु पृथ्वी पर, आम आदमी के भाँति प्रकट अवस्था है, जो स्वयं संघर्ष करता हुआ, जन्म मरण प्राप्त है। **संभोगकाय** अवस्था, एक दिव्य आनंदमय शरीर है, यह बुद्ध का सूक्ष्म शरीर है, ये भक्ति का विषय भी है। स्वसंभोगकाय बुद्ध शरीर पारलौकिक, अनंतगुणयुक्त सर्वज्ञ, तेजवान प्रभावाला है, भक्तों के विविध स्वभावानुसार स्वसंभोगकाय बुद्ध शरीर, अनेक रूपों में व्यक्त होते है, इसका अनुभव उच्चतर समाधि में स्थित **बोधिसत्वों** अनुभव होता है, जो ज्ञानाग्रणी है, समाज को विकसित कर रहे है, सिद्धियुक्त है। धर्मकाय अत्यंत उच्च अवस्था है, जो सभी कोटियों से परे है, यह बुद्धत्त्व का सवोच्च, अप्रकट, शाश्वत स्थिति है, जो किसी भी भौतिक रूप से परे है, अनिवर्चनीय है। ब्राह्मण ग्रंथों में धर्मकाय की तुलना **'बह्म'** से की जा सकती है। संभोगकाय शरीर में स्थित बुद्ध की तुलना मायासंयुक्त **'ईश्वर'** से कि जा सकती है। निर्माणकाय शरीर की तुलना **अवतार विग्रह** से की जा सकती है, जो ज्ञान प्रकाश के लिए पृथ्वी पर अवतरित होते है। ब्राह्मण ग्रंथ एवं बौद्धों में सिर्फ विचारधारा का अंतर है, साधन सार एक ही है।

संदर्भ–

1. Williams 2009, P. 178
2. Williams 1987, P. 100
3. गाडजिन, नगाओ और हिरानो उमेयो ''बुद्ध शरीर के सिद्धांत पर'' पूर्वीबौद्ध, खंड 6, अंक 1, 1973, P. 25–53
4. महायान सूत्रालंकार, 9/64
5. दीघनिकाय भाग 1, पृ0 87–88
6. Williams 2009, P. 183–84
7. Williams, 2009, P. 181
8. लेद्रो सांगपो, जी. एट. एल (ट्रांस) 2017, विज्ञप्तिमात्रासिद्धि, PP. 1120–27
9. व्हीं, PP. 1125–31
10. महायानसूत्रालंकार 9/62
11. Paul Williams, P. 178
12. त्रिशिका, श्लोक 30, पृ0 43
13. Makranski, 1997, P. 93